Indian Scholar
ISSN 2350-109X
www.indianscholar.co.in
An International Multidisciplinary Research e-Journal

काव्य–लक्षण और चम्पूकाव्य का स्वरूप

डॉ0 राजू राठौर
अतिथि विद्वान्– (विषय–संस्कृत)
शासकीय महर्षि अरविन्द महाविद्यालय
गोहद– जिला भिण्ड (म0प्र0)

वस्तु की सिद्धि लक्षण से होती है। रसात्मक वाक्य काव्य कहलाता है। काव्य में 'चम्पू विधा' भी रसोत्कर्ष की परिचायक हैं।

काव्य का लक्षणः– काव्य हृदय की भावनिष्ठ प्रतिष्ठा है। आचार्य मम्मट द्वारा प्रदत्त काव्य का लक्षण काव्य शास्त्रियों को अधिक रोचक लगा।''लक्षणप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धि'' किसी भी वस्तु की सिद्धि लक्षण अथवा प्रमाण से होती है इस नियम के अनुसार काव्य के प्रयोजन व कारण के निर्वचनानन्तर काव्य पद प्रवृत्ति निमित्यर्थक या काव्य के व्यवहार के लिए उसके लक्षण का निरूपण करते हैं–

''तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वाऽपि''[1]

दोषरहित और गुणरहित कहीं कहीं अलंकारों से रहित भी शब्द और अर्थ (दोनों की समष्टि) काव्य कहलाते हैं।

अर्थात्– काव्य शब्द और अर्थ के मंजुल समन्वय में विराजमान हैं, जिस प्रकार ''अर्धनारीश्वर''–शिव और पार्वती का नित्य सम्बन्ध है, उसी प्रकार शब्द और अर्थ भी काव्य में नित्य समभाव से रहते हैं।

काव्यादर्श के प्रणेता दण्डी ने मनोरम अर्थ से विभूषित अर्थ को काव्य का शरीर माना हैं।[2] काव्यादर्श में दण्डी ने गुण व अलंकार युक्त शब्दार्थ को ही काव्य माना है। ये काव्य में अल्प मात्र भी दोष स्वीकार नहीं करते।[3] वामन दण्डी के उत्तरवर्ती काव्य लक्षणकार माने गये हैं। उन्होंने काव्य को अलंकार के योग से ही उपादेय कहा हैं।[4] उनके अनुसार सौन्दर्य के आधायक तत्व का नाम ही अलंकार हैं।[5] ये दोषों से रहित गुण व अलंकारां से सुसज्जित काव्य को सौन्दर्य का कारण मानते हैं।[6] इस प्रकार वामन ने शब्द, गुण एवं अलंकार युक्त शब्दार्थ समूह को काव्य कहा है। वामन ने ही आगे चलकर 'रीतिरात्मा काव्यस्य' कहकर रीति को काव्य का शरीर माना हैं।[7] इस प्रकार रीति की चर्चा यहां पूर्ववर्ती आचार्यो की अपेक्षा वैशिष्ट्य रखती हैं। वामन का अनुकरण करते हुये रूद्रट ने 'ननु शब्दार्थो काव्यम्' लिखकर व्यक्त की हैं।[8] अतः वे भी दोष रहित और अलंकार युक्त शब्दार्थ को काव्य कहते हैं, उन्होंने काव्य में इसकी स्थिति को परमावश्यक माना हैं।[9] ध्वनिमार्ग के प्रवर्तक आनन्दवर्धन ने ध्वनि को काव्य की आत्मा स्वीकार किया हैं।[10] यद्यपि आनन्दवर्धन ने काव्य लक्षण का विस्तृत उल्लेख नहीं किया है किन्तु उन्होंने ही शब्दार्थ युगल को ही काव्य स्वीकार किया हैं।[11]

ध्वन्यालोक के पश्चात् 'वक्रोक्तिजीवितम्' के प्रणेता कुन्तक ने शब्द एवं अर्थ दोनों को 'काव्य' स्वीकार किया है एवं भामहादि का अनुकरण किया हैं।[12] परन्तु कुन्तक ने व्यक्ति वैचित्र्य वाले शब्द एवं अर्थ को ही काव्य माना हैं।[13] अतः उनके मत में उक्ति वैचित्र्य का स्थान प्रमुख है। उक्ति वैचित्र्य से रहित शब्दार्थ मात्र काव्य नहीं कहा जा सकता।

चम्पूकाव्य–स्वरूप–विश्वनाथ ने गद्य–पद्य–मय काव्य को चम्पू कहा, उन्हीं का समर्थन मन्दारमरन्द ने भी किया–

''गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते यथादेशराजचरितम्।।[14]
किसी एक अज्ञात विद्वान् की भी परिभाषा मिलती हैं–
गद्यपद्यमय सांका सोच्छ्वासा कविगुम्फिता।

उक्तिप्रत्युक्तिविष्कम्भशून्या चम्पूरूदाहृता।।[15]

चम्पूकाव्य की विशेषतायें– 1. चम्पूकाव्य गद्य–पद्य–मय होता हैं।
2. वह सांक होता हैं।
3. वह उच्छ्वासों में विभाजित होता हैं।
4. उसमें उक्ति–प्रत्युक्ति नहीं होती।
5. वह विष्कम्भ–शून्य होता हैं।

चम्पूकाव्य निर्माताओं की दृष्टि में– उदाहरणार्थ चम्पूकाव्यकारों के निम्नलिखित कथन द्रष्टव्य हैं–

गद्यावली पद्यपरम्परा च प्रत्येकप्यावहति प्रमोदम्।

हर्ष–प्रकर्षं तनुते मिलित्वा द्राक्बाल्यतारूणवतीव कन्या।।[16]
गद्यानुबन्धरसमिश्रितपद्य–सूक्तिर्हृद्या हि वाद्यकलया कलितेव गीतिः।

तस्माद् दधातु कविमार्गजुषां सुखाय चम्पूप्रबन्धरचनां रसना मदीया।।[17]
मदयति मनो मदीयं तनु जघनभारतीरसविलासः।

किमु सुतनु नीरविहारो नहि नहि चम्पूविहारोऽयम्।।[18]
पद्यं यद्यपि विद्यते बहुसतां हृद्यं विगद्यं न तन्,
गद्यं च प्रतिपद्यते न विजहत्पद्यं बुधास्वाद्यताम्।
आदत्ते हि तयोः प्रयोग उभयोरामोदभूमोदयं,

संगः कस्य हि न स्वदेत मनसे माध्वीकमृद्वीकयीः।।[19]
पद्यैरनवद्यैरपि–गद्यैर्ललितास्तुद्यैकृतिभिरियं हृद्या।

तुलसीप्रवालविचकिलकलिता मालेव भगवतः शौरेः।।[20]
गुणागणमणिमालालंकृतं गद्यपद्यैः,

धरत हृदि बुधेन्द्राः साधु चम्पू–प्रबन्धकम्।।[21]
पद्यं हृद्यमपीह गद्यरहितं धत्ते न हृद्यास्पदं,
गद्यं पद्यविवर्जितं च भजते नास्वाद्यतां मानसे।
साहित्यं हि तयोर्द्वयोरपि सुधामाध्वीकयो र्योगवत्

संतोषं हृदयाम्बुजे वितनुते साहित्यविद्याविदाम्।।[22]

इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि चम्पूकाव्य निर्मताओं की दृष्टि में, गद्य–पद्य का मिश्रण, काव्य में ऐसी सरसता उत्पन्न करता है, जो केवल गद्य या पद्यबद्ध काव्यों में नहीं मिलती।[23]

संदर्भ–संकेत

1. काव्यप्रकाश– 1/4
2. काव्यादर्श– 1/10
3. काव्यादर्श– 1/7
4. काव्यालंकार सूत्र– 1/1/1
5. काव्यालंकार सूत्र– 1/1/2
6. काव्यालंकार सूत्र– 1/1/3
7. काव्यालंकार सूत्र– 1/2/6
8. काव्यालंकार सूत्र– 2/1
9. काव्यालंकार सूत्र– 12/2
10. ध्वन्यालोक– 1/1
11. ध्वन्यालोक– पृष्ठ–5
12. वक्रोक्ति जीवित– पृष्ठ–5
13. वक्रोक्ति जीवित– 1/7
14. साहित्यदर्पण– 6/336
15. द्रष्टव्य– नृसिंहचम्पू, दैवज्ञ सूर्य, डॉ0 सूर्यकान्त द्वारा संपादित, की भूमिका।
16. जीवंधर चम्पू– 1/9
17. चम्पूरामायण–बालकाण्ड–3
18. गोपाल चम्पू–अंतिम छंद
19. विश्वगुणादर्शचम्पू–1/4
20. बाल भागवतम्–चम्पू
21. गौरी मयूर माहत्म्यम्– उपान्तिम
22. कुमारसंभव चम्पू–1/6
23. चम्पूकाव्य का आलोचनात्मक–अध्ययन–डॉ0 छविराम त्रिपाठी–चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी, 1965 (द्रष्टव्य पृष्ठ– 29–31)